श्याम मोहन अस्थाना

रावण तेरे रूप अनेक

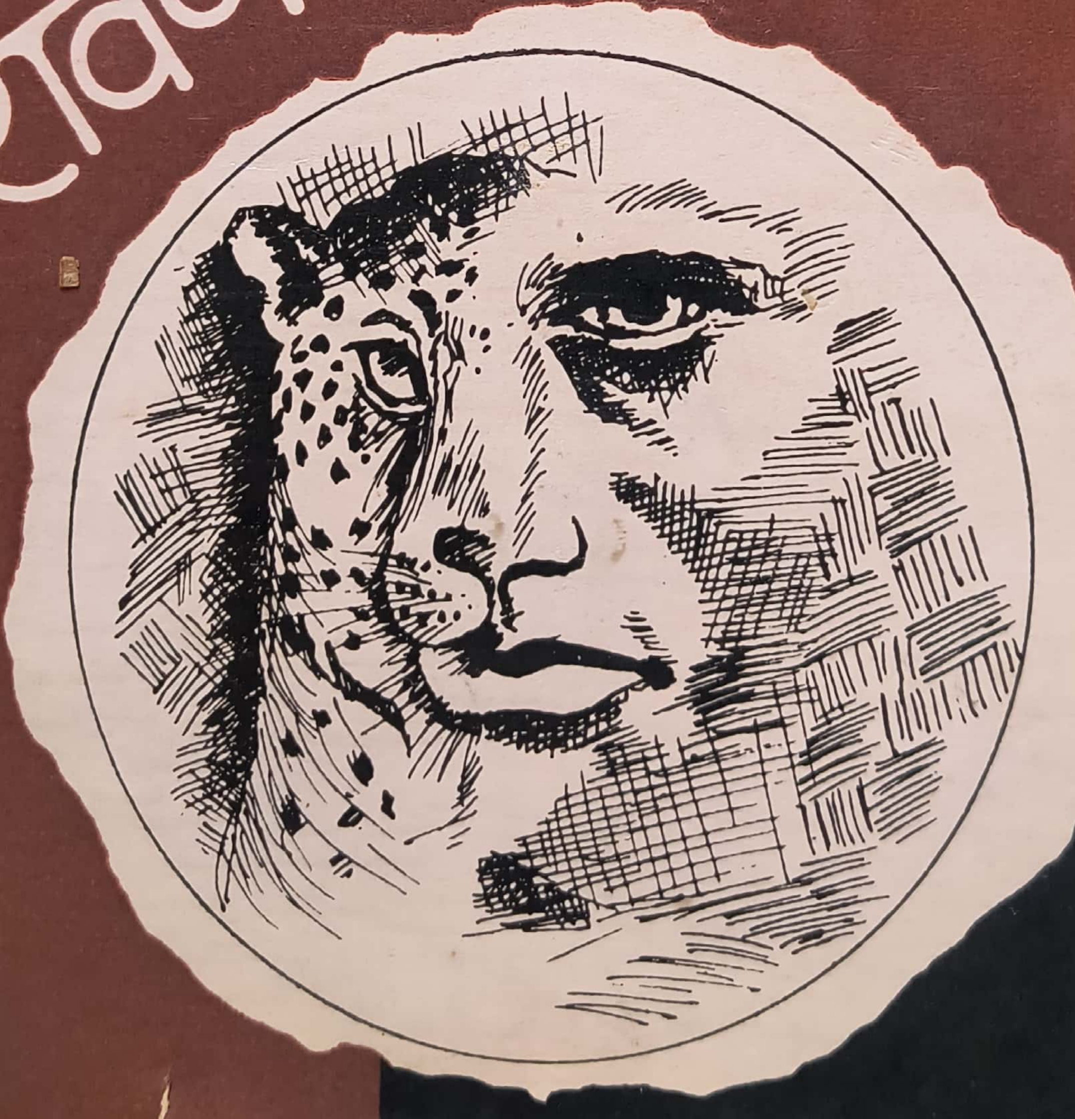

বীণা

रावण तेरे रूप अनेक

रंगमंचीय
पूर्ण कालिक नाटक

रावण तेरे रूप अनेक

श्याममोहन अस्थाना

अभिव्यक्ति प्रकाशन
दिल्ली-32

इस नाटक को मंचित करने से पूर्व लेखक की अनुमति प्राप्त करना आवश्यक है। संपर्क सूत्र : श्याममोहन अस्थाना
मानसरोवर कॉलोनी,
अस्पताल रोड, आरा (बिहार)

प्रकाशक : अभिव्यक्ति प्रकाशन, 29/61, गली नं० 11, विश्वासनगर, दिल्ली-110032 / मूल्य : बीस रुपये / प्रथम संस्करण : 1989
© लेखक / मुद्रक : शांति मुद्रणालय, विश्वासनगर, दिल्ली-32

RAVAN TERE ROOP ANEK By Shyam Mohan Asthana
(A Full-length Social play) Rs. 20.00

कवि, नाटककार, आलोचक
डा० रामकुमार वर्मा
को
सादर समर्पित

पात्र-परिचय

सूत्रधार
नटी
राम/राम वर्मा
सीता/सीता किशोरी
रावण/रावणेश्वर शर्मा, मंत्री
मंदोदरी
सीनियर चमचा
जूनियर चमचा
फिल्म प्रोड्यूसर
डायरेक्टर
नायक
होटल का मालिक
इंजीनियर
ठेकेदार
जंगल का अधिकारी
जटायु
सुग्रीव
हनुमान
जामवंत
मेधा
शंकरदेव
एवं
कुछ आदिवासी लड़के एवं लड़कियां

पहला अंक

दृश्य-1

स्थान : रामलीला का मंच।

[सूत्रधार और नटी मंगलाचरण गाते हैं]

(मंगलाचरण)

जेहि सुमिरत सिधि होइ, गननायक कविवर वदन,
करउ अनुग्रह सोइ, बुद्धि रासि सुभ गुन सदन
मूक होइ वाचाल, पंगु चढ़इ गिरिवर गहन
जासु कृपा सो दयालु द्रवउ सकल कलिमल-दहन।
नील सरोरुह स्याम, तरुन-अरुन वारिज नयन
करउ सो मम उर धाम, सदा छीर सागर सयन,
कुन्द-इन्दु-सम देह, उमा रमन करुना-अयन
जाहि दीन पर नेह, करउ कृपा मर्दन मयन
बंदउं गुरु-पद-कंद, कृपासिन्धु नररूप हरि
महा-मोह-तम-पुंज, जासु वचन रवि कर निकट।

नटी : आर्यपुत्र, आज हम भगवान् राम की कौन-सी लीला प्रस्तुत करने जा रहे हैं ?

सूत्रधार : देवी, आज सीता हरण का प्रसंग है। पंचवटी में माया-मृग के आगमन से लेकर जटायु-

रावण के युद्ध को कथा आज प्रस्तुत की जायगी।

नटी : अहा, आज की लीला तो बहुत रोचक होगी। दुष्ट मारीच का मायाजाल, भगवती सीता की विरह-पीड़ा और जटायु का वीरोचित परा क्रम-एक से एक दिलचस्प प्रसंग हैं। आज तो सचमुच रसों की वर्षा होगो।

सूत्रधार : हां देवी, तुम ठीक कहती हो ! पंचवटी से राम कथा में एक तीखा मोड़ आता है। आज नायक और खलनायक, राम और रावण का पहला मुकाबला होगा।

नटी : धन्य है। आर्यपुत्र, अब और विलम्ब न कीजिये। देखिये मंच के सम्मुख रंगशाला खचाखच भर गयी है।

सूत्रधार : देवी, लगता है कि आज कुछ देर होगी। लीला शुरू करने से पहले मैं प्रमुख पात्रों से कुछ बातचीत करना चाहता हूं।

नटी : बातचीत ! इसकी क्या जरूरत है ?

सूत्रधार : देवी, कल लीला के बाद मेरे पास नगर के कुछ बुद्धिजीवी आये थे। उन्होंने रामकथा के बारे में एक नया दृष्टिकोण रखा। मैं पात्रों के साथ उस पर विचार करना चाहता हूं।

नटी : आर्यपुत्र, इन तथाकथित बुद्धिजीवियों को इतना महत्व मत दीजिये। समाज के सुख-दुख से उदासीन यह सुविधा भोगी वर्ग समाज को टिप्पणियों के सिवा क्या दे सकता है !

सूत्रधार : देवी, इस वर्ग के विरुद्ध इतनी घृणा और

आक्रोश अनुचित है। वशिष्ठ और विश्वामित्र के बिना क्या राम एक युग पुरुष बन पाते ?

नटी : उनकी बात छोड़िये। आज की जिन्दगी में वशिष्ठ और विश्वामित्र कहां हैं ?

सूत्रधार : उन्हें खोजा ही किसने है ?आज हम घोर व्यवहारिक हो गये हैं। हम सिर्फ उन्हें खोज रहे हैं, जो हमें बिना परिश्रम सब कुछ दे दें।

नटी : शायद आप ठीक कहते हैं।

सूत्रधार : देवी, उन लोगों ने कहा कि राम-कथा और आज की जिन्दगी में बहुत बड़ा अन्तर आ गया है। राम के मिथक को आज की जिन्दगी से जोड़ना बहुत जरूरी है।

नटी : आर्यपुत्र, हम लोग कई पीढ़ियों से यही लीला प्रस्तुत करते आ रहे हैं। ऐसी आलोचना तो कभी किसी ने नहीं की।

सूत्रधार : उन्होंने कहा कि राम और रावण की कथा इस देश का बुनियादी मिथक है। लेकिन समय के संदर्भ में इसका स्वरूप बदलना चाहिये।

नटी : छोड़िये देव, ये सब बहुत बारीक बातें हैं। बुद्धिजीवी वर्ग अपने तर्कों की पच्चीकारी से दूसरों को बिना वजह आतंकित करना चाहता है।

सूत्रधार : नहीं देवी, ये बातें निरर्थक नही हैं। मैं आज एक नया प्रयोग करने जा रहा हूं।

नटी : नया प्रयोग ! यह आप क्या कह रहे हैं ? कहीं यह प्रयोग के लिये प्रयोग होकर तो नहीं रह जायगा ?

सूत्रधार : देवी, तुम धीरे-धीरे सब कुछ समझ जाओगी।

(वनवासी राम का प्रवेश)

राम : पंडित जी, आपने मुझे बुलाया है ?

सूत्रधार : राम जी, सभी मूर्तियां तैयार हो गयीं ?

राम : करीब-करीब ! आज मेकअप मैन नहीं आया है। सब लोग अपना-अपना मेकअप स्वयं कर रहे हैं। अरे हां, रावण की गदा नहीं मिल रही है।

नटी : वह तो मैंने बड़े बक्से में रख दी है।

सूत्रधार : बड़े बक्से की आज जरूरत नहीं थी। मैंने उसे धर्मशाला में ही छोड़ दिया।

नटी : अब क्या होगा ! किसी को भेजूं ?

सूत्रधार : नहीं, आज रावण को गदा की जरूरत नहीं पड़ेगी।

राम : कारीगर ने माया-मृग बहुत सुन्दर बनाया है। उसमें एक कल लगी है, वह चाभी देने पर चौकड़ी भरने लगता है।

सूत्रधार : हां, कारीगर ने अच्छी चीज़ बनायी है। लेकिन माया-मृग की अब जरूरत नहीं होगी।

राम : यह आप क्या कह रहे हैं ?

सूत्रधार : राम जी, मैं तुमसे कुछ विशेष बात करना चाहता हूं। कल तुम्हारे अभिनय की गहरी आलोचना हुई है।

राम : हां, उनका कहना ठीक है। मैं कई बार संवाद भूल गया था। क्या करूं, माइक बार-बार बिगड़ जाता था। रामायणियों का संकेत सुनने के लिये मुझे बार-बार नेपथ्य में जाना

पड़ता था।

नटी : देव, मैं ग्रीन रूप में जा रही हूं। कल मैं सूपर्णखा बनी थी। आज मेरे लिये कौन-सी भूमिका है ?

सूत्रधार : देवी, तुम भीतर जाओ। मैं तुरन्त आता हूं। सब-कुछ तय हो जायगा।

(नटी का प्रस्थान)

राम : पंडित जी, मेरे लिये क्या आदेश है ?

सूत्रधार : राम जी, कल जो कुछ हुआ, उसे भूल जाओ। आज तुम्हें राम की सही भूमिका प्रस्तुत करनी है।

राम : राम की सही भूमिका ! पंडित जी, यह आप क्या कह रहे हैं ?

सूत्रधार : राम एक महान विचारक, प्रखर योद्धा और अत्यन्त चरित्रवान जननायक थे। कर्म की आग में तप कर वह एक अवतारी पुरुष बने।

राम : हां, भगवान् राम का चरित्र तो जानता ही हूं, उनका सभी संवाद मुझे याद है। हां, कभी-कभी रामायणियों के संकेत की जरूरत पड़ती है।

सूत्रधार : आज न रामायणी होंगे, न तुम्हें कोई संकेत देगा। परिस्थितियां भी थोड़ा भिन्न हो सकती हैं। तुम्हें नये परिवेश में राम की भूमिका खोजनी होगी।

राम : नये परिवेश में राम की भूमिका। क्या आप कोई नया नाटक खेलना चाहते हैं ?

सूत्रधार : नहीं, वह भी राम और रावण की कथा होगी।

सच कहा जाय तो मैं रामायण की कहानी को ही आगे बढ़ाना चाहता हूं।

राम : इस नयी रामायण की किताब कहां है ?

सूत्रधार : नयी रामलीला की अभी तक कोई किताब नहीं है। परिस्थितियों के प्रवाह में तुम्हें अपना संवाद खोजना होगा। व्यवहार संहिता तय करनी होगी।

राम : क्या आप मेरी परीक्षा लेना चाहते हैं ?

सूत्रधार : तुम एक पढ़े-लिखे युवक हो। ईश्वर करे, तुम्हें इस परीक्षा में सफलता मिले।

राम : लेकिन पंडित जी, क्या जनता रामायण के साथ किसी छेड़-छाड़ को पसंद करेगी ?

सूत्रधार : जनता एक ही कहानी की अनगिनत आवृ-तियों से ऊब चुकी है। वह रामकथा के नये संस्करण का इंतजार कर रही है ?

राम : ठीक है, कोशिश करूंगा। लेकिन इस मेकअप को तो बदलना पड़ेगा ?

सूत्रधार : हां, राम सबसे पहले एक विचारक थे। तुम एक आधुनिक बुद्धिजीवी का मेकअप कर लो।

राम : जैसा आप कहें। ठीक है, जा रहा हूं।

(राम का प्रस्थान। सीता का प्रवेश)

सीता : पंडित जी, आपने मुझे याद किया है ?

सूत्रधार : हां सीता, तुम्हारा मेकअप हो गया ?

सीता : अभी कहां हुआ है ! मेकअप मैन नहीं आया। सलमा-सितारा नहीं मिल रहा है।

सूत्रधार : तुम सलमा-सितारा लगाओगी ?आज तुम्हारा स्वयंवर है या रावण के द्वारा हरण ? आज तो

पंचवटी की लीला है ।

सीता : देखिए पंडित जी, अयोध्या हो या पंचवटी, सीता को सीता दिखना चाहिए। अभी तो मुझे गहना पहनना है ।

सूत्रधार : तुम आज गहना पहनोगी ?

सीता : आपको याद नहीं है। रावण के अपहरण के बाद सीता विमान से अपने गहनों को बारी-बारी से गिराती है। इससे राम और वानर सेना को सीता के अपहरण के भूगोल का पता लगता है ।

सूत्रधार : हां, वह प्रसंग तो ठीक है पर तुम आज गहने नहीं पहनोगी। सीता को सीता दिखने के लिए गहनों या सलमे-सितारों की जरूरत नहीं है।

सीता : यह आप क्या कह रहे हैं ?

सूत्रधार : ठीक कह रहा हूं। आज तुमको सीता की सही भूमिका प्रस्तुत करनी होगी।

सीता : मैं आपको समझ नहीं पा रही हूं।

सूत्रधार : सीता वास्तव में एक भूमिकन्या थी। आज की भाषा में उसे एक हरिजन या आदिवासी कन्या कहेंगे। वह राजा जनक की पुत्री नहीं, धर्म-पुत्री थी।

सीता : इससे क्या फरक पड़ता है ?

सूत्रधार : फरक पड़ता है। आज तुम्हें मुकुट वाली सीता नहीं, एक संघर्षशील और व्यवहारिक सीता की भूमिका निभानी है।

सीता : क्या आपने नाटक बदल दिया है ?

सूत्रधार : नहीं, यह वही राम और सीता की कहानी है, सिर्फ परिवेश बदला है। तुम्हें नये संदर्भ में सीता की विवशता और संघर्ष को चित्रित करना होगा।

सीता : पंडित जी, आप बड़ी ऊटपटांग बातें सोचते रहते हैं। अंतिम क्षण में भूमिकाएं बदल देते हैं।

सूत्रधार : रामायण काल में भी यही हुआ था। सीता को क्या मालूम था कि उसे सोने का मृग नहीं, यातना का नरक मिलने वाला है।

सीता : ठीक है, देखती हूं। वैसे आपने नयी सीता की पोशाक के बारे में कुछ सोचा है ?

सूत्रधार : तुम एक वर्किंग-गर्ल की पोशाक पहन लो। इसमें मेकअप की कोई जरूरत नहीं है।

सीता : चलिए, ट्राई करती हूं।

(सीता का प्रस्थान। रावण का प्रवेश)

रावण : पंडित जी, सुना है कि कुछ उलट पुलट हुई है।

सूत्रधार : तुमसे किसने कहा ?

रावण : राम जी बड़बड़ा रहा था।

सूत्रधार : रावण, जनता तुम्हारे अभिनय से संतुष्ट नहीं है।

रावण : यह बिलकुल झूठ है। मुझसे अच्छा रावण का पार्ट करने वाला पूरे इलाके में नहीं है। मैं जब गदा लेकर गरजता हूं तो बच्चे मां की गोद में चिपक जाते हैं।

सूत्रधार : हमें सिर्फ गरजने वाला रावण नहीं चाहिए। रावण एक महान विद्वान, प्रखर योद्धा और

एक अत्यन्त महत्वाकांक्षी व्यक्ति था। रावण के पूरे चरित्र का चित्रण होना चाहिए।

रावण : आप जो कहेंगे, वही होगा। रामलीला के डाइरेक्टर तो आप ही हैं।

सूत्रधार : तुम्हें रावण की नयी व्याख्या करनी होगी। उसे आधुनिक परिवेश में प्रस्तुत करना होगा।

रावण : ठीक है। जब आप नयी रामलीला का मंचन कर ही रहे हैं तो मैं भी कुछ सुझाव देना चाहता हूं।

सूत्रधार : ठीक है, बोलो।

रावण : रावण की इतनी उपेक्षा नहीं होनी चाहिए। जब राम मंच पर आते हैं तो घड़ी-घंट बजने लगते हैं लेकिन सभी लोग रावण को बराबर हूट करते हैं।

सूत्रधार : रावण आखिर रावण ही है। मैं उसे राम तो नहीं बना सकता।

रावण : रावण को राम बनाने की जरूरत नहीं है। वह स्वयं एक संस्कृति का संवाहक था। सच कहा जाय तो रावण एक खलनायक नहीं, एक प्रतिनायक था।

सूत्रधार : ठीक है, मैं इस पहलू पर विचार करूंगा।

रावण : पंडित जी, जिसे आप रामलीला कहते हैं, वह वस्तुतः रावण लीला है। रावण को आप हीरो कहें या ऐंटी हीरो, वह रामायण का केन्द्रीय पुरुष है।

सूत्रधार : इस बात को तुम कैसे कह सकते हो। बाल्मीक हों या तुलसी, सबने राम को ही नायक माना

है।

रावण : एक बात और कहना चाहता हूं। रावण एक व्यक्ति का नाम नहीं, कई लोगों का सामूहिक नाम है।

सूत्रधार : क्या कहते हो, कुछ समझ में नहीं आया।

रावण : रामकथा के अनुसार रावण के दस चेहरे थे। ये दसों चेहरे अब विद्रोह कर रहे हैं। आपको अब इन चेहरों की अलग अलग पहचान प्रस्तुत करनी होगी।

सूत्रधार : यह कैसे हो सकता है ?

रावण : कोई चारा नहीं है। रावण के दसों चेहरों को अब एक साथ कूट कर नहीं चिपकाया जा सकता। इनके अलग अस्तित्व को स्वीकार करना होगा।

सूत्रधार : तुमने अजीब झंझट पैदा कर दी। मैं इतने कम समय में दस पात्र कहां से ला सकता हूं ?

रावण : आप दस चेहरों से ही परेशान हो गए। रावण एक रक्तबीज संस्कृति का नाम है। कल दस से सौ, सौ से हजार, हजार से लाख—शायद कई करोड़ चेहरे दिखाई पड़ेंगे।

सूत्रधार : कल की बात मत करो। इस समय मैं दस पात्र कहां से लाऊं। अगर मिल भी जाएं तो पता नहीं वे कितने पैसे मांगेंगे।

रावण : मैं एक सुझाव देता हूं। सामने के मैदान में सभी तरह के लोग मौजूद हैं। आप उनमें से दस आदमियों को पिकअप कर लीजिए।

सूत्रधार : हां, यह तो हो सकता है। कोशिश करके

देखता हूं। (आगे बढ़कर) भाइयो, हम आज आपके सामने नई रामलीला प्रस्तुत करने जा रहे हैं।

एक आवाज : नयी रामलीला, हो या पुरानी रामलीला कृपया जल्दी शुरू कीजिए।

सूत्रधार : एक समस्या है। हमें दस नये पात्रों की जरूरत है। कृपया दस लोग, जो अभिनय करना चाहें, मंच पर आ जाएं !

एक आवाज : चलो यार, अच्छा चांस है।

दूसरी आवाज : हां, हां चला जाय। फिल्म में जाने के लिए स्टेज का अनुभव जरूरी होता है।

(लोग एक-एक कर मंच पर चढ़ते हैं)

सूत्रधार : धन्यवाद ! मुझे आप लोगों से ऐसी ही उम्मीद थी।

(गिनता है, एक, दो, तीन, चार, पांच, छह, सात, आठ, नौ, दस—पूरे दस हैं)।

एक व्यक्ति : हमें लोगों को क्या करना होगा।

सूत्रधार : आप क्या करते हैं ?

वही व्यक्ति : मैं दादागीरी करता हूं। लोग मुझे नेता जी कहते हैं।

सूत्रधार : ठीक है, आपको वही काम करना होगा। (दूसरे व्यक्ति से) आप क्या करते हैं ?

दूसरा व्यक्ति : जी, मैं नेता का मित्र हूं। नेता जी मुझसे पूछे बिना कोई काम नहीं करते।

सूत्रधार : तो यों कहिए कि आप नेता जी के चमचा हैं। (तीसरे व्यक्ति से) आपका परिचय ?

तीसरा व्यक्ति : जी, मैं नेता जी के मित्र का मित्र हूं। मैं नेता

जी का बक्सा ढोता हूं, होलडाल बांधता हूं।

सूत्रधार : समझ गया। आप नेता जी के जूनियर चमचा हैं।

तीसरा व्यक्ति : हें-हें-हें।

सूत्रधार : अच्छा भाइयो, आप सभी अपना-अपना परिचय दीजिए।

चौथा व्यक्ति : मैं एक फिल्म प्रोड्यूसर हूं।

पांचवां व्यक्ति : मैं एक फिल्म डाइरेक्टर हूं।

छठा व्यक्ति : मैं फिल्म का जूनियर अमिताभ बच्चन हूं।

सातवां व्यक्ति : मैं बम्बई के कई होटलों का मालिक हूं।

आठवां व्यक्ति : मैं एक इंजीनियर हूं।

नवां व्यक्ति : मैं एक ठेकेदार हूं।

दसवां व्यक्ति : मैं वन विभाग में रेंजर हूं।

सूत्रधार : ठीक है। भाइयो, आप सभी लोगों का स्वागत है।

सीनियर चमचा : लेकिन हम लोगों को अभिनय का कोई अनुभव नहीं है।

सूत्रधार : कोई बात नहीं। घबड़ाने की कोई जरूरत नहीं है।

जूनियर चमचा : हमारी भूमिकाएं बता दीजिये।

सूत्रधार : वास्तविक जीवन में आप जो कुछ है मंच पर भी आपकी वही भूमिका होगी।

नेता : तब तो कोई दिक्कत नहीं है। याद करने की भी जरूरत नहीं है।

एक आवाज़ : सूत्रधार महोदय, अगर आपने लीला शुरू नहीं की तो हम पत्थर फेंकेगे।

सूत्रधार : नहीं भाइयो, पत्थर या सड़े टमाटर फेंकने की

कोई जरूरत नहीं है। हमारा खेल अब शुरू हो रहा है। चूंकि हमारे पात्रों में आज कई रावण हैं इसलिए आज की लीला का नाम रामलीला नहीं रावण लीला होगा। रावण, तेरे कितने रूप, कितने नाम !

(जनता में हल्की-सी हलचल)

(प्रकाश बुझता है)

दूसरा अंक

दृश्य-2

दृश्यबंध : पीछे एक जंगल की पृष्ठभूमि। दायें तरफ एक डाक बंगले का कोना। मंच के बायें ओर एक साफ-सुथरी झोंपड़ी (नेपथ्य से) राम कथा की भीड़ है,सुनहु वीर हनुमान, जाय के आसन लीजिये, लखन सिया संग राम।

(स्टेज पर प्रकाश होता है)

(जटायु और आदिवासियों की टोली नृत्य करती है)

(गीत एवं नृत्य)

महुआ की डाल झरे, झर-झर-झर,
गोरी बटोरे आंचल भर।
महुआ ये महके, मनवा बहके,
बहे पवनवा, सर-सर-सर।
ऊपर है छाया, नील गगन,
धरती है अपना घर-आंगन,
जामुन, आम, आंवला, कटहल
सब प्यारे सहचर।

(राम का प्रवेश। जटायु को छोड़कर सभी

आदिवासियों का प्रस्थान)

राम : भाई जटायु, आज तो बड़ी मस्ती है। सुबह-सुबह ही ढोलक बज रही है।

जटायु : दादा, आज महुआ में पहले फल आए हैं। आज हमारा महुआ परब है।

राम : जिसे कल की चिन्ता न हो, उसके लिये हर दिन परब है। एक थाली भात और महुआ का एक कटोरा-एक सौ गीतों के लिये काफी है।

जटायु : दादा, इन गीतों को अब धीरे-धीरे ग्रहण लग रहा है। वन अधिकारियों का शोषण बढ़ता जा रहा है। ठेकेदार तो पागलों की तरह वन सम्पदा का विनाश कर रहे हैं।

राम : जंगल के कानून बहुत जटिल हैं। उनका ठीक से पालन नहीं हो रहा है।

जटायु : दादा, जंगल के कानून अन्यायपूर्ण हैं। हमें अपने परिवेश से अलग किया जा रहा है। वन से अलग होकर वनवासियों के पास क्या बच जायेगा।

राम : तुमने वन अधिकारियों से नहीं कहा ?

जटायु : कहा था, लेकिन कोई सुनवाई नहीं हुई। इन अधिकारियों के पास न तो आंख है, न कान।

राम : सुना है कि पंचवटी में आज कोई मंत्री पधार रहे हैं। उनसे बात करो।

जटायु : हमने भी सुना है। लेकिन रेंजर हमें मंत्री महोदय से मिलने नहीं देगा। कई दिनों से हमें धमका रहा है···खबरदार, मुंह खोला तो अच्छा नहीं होगा।

राम : अजीब हाल है ! एक गलत व्यवस्था पूरे समाज पर कुंडली मार कर बैठ गयी है। वह अब अपने बच्चों को ही खा रही है !

जटायु : दादा, सीता बहन अभी तक नहीं आयीं ?

राम : पूरे सोलह मील का चक्कर है। कभी-कभी बस भी छूट जाती हे ।

जटायु : दादा, आप भी तो शहर के किसी कालेज में थे ?

राम : हां, मैं महात्मा गांधी कालेज में सोशियालोजी का लेक्चरर था । पांच साल तक काम किया।

जटायु : सुना है कि कालेज के अधिकारियों ने आपके साथ बहुत अन्याय किया ?

राम : न्याय किया या अन्याय, मालूम नहीं। मुझे रिसर्च के नाम पर फोर्स्ड लीव यानि जबरन छुट्टी दी गयी। अगर छुट्टी न लेता तो सस्पेंड हो जाता ।

जटायु : इतनी नाराज़गी की वजह ?

राम : तुम्हारी सीता बहन एक हरिजन परिवार की कन्या हैं । मेरा सबसे बड़ा कुसूर था कि उच्च वर्गीय होकर मैंने एक हरिजन कन्या से विवाह किया ।

जटायु : यह तो सरासर अन्याय है। पढ़े-लिखे लोग इतनी संकीर्णता बरतेंगे तो समाज का क्या होगा !

राम : यही तो मूल सवाल है। लेकिन इसका जवाब किसी के पास नहीं है। समाज में थोड़े से चक्रवर्ती लोग हैं। शेष जनता साक्षात नरक

भोग रही है।

जटायु : दादा, तुम लोगों के आने से हम लोगों के भाग्य खुल गये। दीदी ने सभी लड़कियों को साक्षर बना दिया है। आपसे भी हमने कितनी बातें सीखी हैं।

राम : जटायु, जब हम यहां पहली बार आये थे तो हमें कुछ भी अच्छा नहीं लगा था। अब हमें सब कुछ अच्छा लगता है। यहां जिन्दगी की लय बहुत मधुर है।

जटायु : लीजिये, दीदी आ गयीं !

[सीता का प्रवेश]

राम : बड़ी देर हुई ! क्या बस छूट गयी थी ?

सीता : छूटी नहीं, बीच रास्ते में बिगड़ गयी थी।

जटायु : दीदी, आज हमारा परब है। मेधा ने आप लोगों को खाने के लिए बुलाया है।

सीता : ठीक है, जरूर आऊंगी। क्या-क्या बनाया है ?

जटायु : दीदी, हम लोगों के पास क्या है ! बाजरे की रोटी और मक्के की खीर। आप लोगों को अच्छी लगेगी ?

राम : जरूर-जरूर ! जाओ, हम लोग ठीक समय पर पहुंच जायेंगे !

[जटायु का प्रस्थान]

राम : आज बहुत परेशान लग रही हो !

सीता : यह स्कूल की नौकरी भी चलने वाली नहीं है। लगता है कि मुझे भी इस्तीफा देना होगा।

राम : क्यों, क्या हुआ ?

सीता : रोज कुछ न कुछ घटता रहता है। सोचती हूं

कि ये पढ़ी-लिखी औरतें भी कितनी 'क्रुएल' और 'मीन' हो सकती हैं !

राम : आज कुछ हुआ है क्या ?

सीता : मैंने दाई से पीने के लिए पानी मांगा। उसने मुझे एक कुल्हड़ में पानी दिया। मैंने पूछा कि गिलास क्या हुआ ? उसने कहा कि बहन जी गिलास गिरकर टूट गया है।

राम : तो इसमें क्या हुआ ! गिलासें तो टूटती ही रहती हैं।

सीता : नहीं, यह बात नहीं थी। कुछ मिनट के बाद मैंने दाई को पुरानी गिलास में पानी ले जाते देखा। टोका, तो कहने लगी—मैं क्या करूं बहन जी, दूसरी दीदी लोग एतराज़ करती हैं।

राम : तुमने हेड-मिस्ट्रेस से नहीं कहा ?

सीता : कहा था। वह नाक चढ़ाकर बोली—देखिए सीता देवी, इन समस्याओं के लिए मेरे पास समय नहीं है। अच्छा हो कि आप किसी हरिजन स्कूल में ट्रांसफर करा लें।

राम : घूम-फिर कर हर बात उसी बिन्दु तक पहुंच जाती है।

सीता : ट्रांसफर से कुछ नहीं होगा। मुझे इस्तीफा ही देना पड़ेगा।

राम : सोच रहा हूं कि वन विभाग से खेती के लिए जमीन ले लूं।

सीता : तुमसे खेती होगी ?

राम : कोशिश करूंगा। आसमान में त्रिशंकु-सा कब तक लटकता रहूंगा। धरती पर उतरना ही

पड़ेगा।

[वन विभाग के रेंजर का प्रवेश]

रेंजर : कहिए रामबाबू, रिसर्च खूब चल रहा है न ? अंधेरे कमरे में काली बिल्ली का पता लगा ?

राम : हां, बिल्ली का पता लग गया। बिल्ली रसोई-घर में थी। घर का पूरा दूध साफ हो गया।

रेंजर : देखिए रामबाबू, बिल्ली तो बिल्ली है, जरूर दूध पिएगी। चूहे जरूर खाएगी। बिल्लियां एकादशी का व्रत थोड़े ही करती हैं।

सीता : लेकिन सरकारी बिल्लियां एकादशी का व्रत करती हैं। सत्तर चूहे खाकर मुंह पोंछ लेती हैं।

रेंजर : **(ही-ही करके हंसता है)** मैडम बहुत अच्छा मजाक करती हैं। लेकिन मैडम, आपने मुझे कभी चूहा खाते देखा है क्या ?

सीता : आज की बिल्लियां सर्वभक्षी हो गई हैं। जमीन जायदाद-सरकारी खजाना, सब कुछ निगल जाती हैं।

रेंजर : ठीक है मैडम, मैं सब कुछ निगलने को तैयार हूं। बोलिए क्या पकाया है ?

सीता : आज तो कुछ नहीं है। आज आदिवासियों का महुआ पर्व है। जटायु बुलाने आया था। हम लोग वहीं जा रहे हैं।

रेंजर : छी-छी-छी ! आप लोग इन जंगली लोगों के यहां खाना खायेंगे। नो-नो आप लोगों को इनको इतना लिफ्ट नहीं देना चाहिए।

राम : ये तो बहुत सीधे-साधे लोग हैं।

रेंजर : क्या कहते हैं। ये बड़े खूंखार लोग हैं। पहले ये

लोग नरभक्षी थे। परब के दिन ये पूरा आदमी आग में भूनकर खा जाते थे !

सीता : ओ माई गॉड !

रेंजर : और आज तो इनका महुआ परब है। ये रात-भर शराब पीयेंगे और आपस में ढिशुंग-ढिशुंग करेंगे।

राम : मैं पिछले साल इनके परब में गया था। बहुत अच्छा माहौल था। रात-भर इनका नृत्य चलता रहा।

रंजर : वह भी कोई नृत्य है। उससे तो बन्दर भालू का नाच अच्छा होता है।

राम । लेकिन हम लोगों ने उनके यहां जाने का वादा कर लिया है।

रेंजर : इससे क्या होता है ! कह दीजिए कि तबियत ठीक नहीं है।

राम : यह कैसे कह सकता हूं ! मेरी तबियत को क्या हुआ है !

सीता : लेकिन मेरी तबियत सचमुच ठीक नहीं है। बस में जो सिर दर्द शुरू हुआ, वह कम नहीं हुआ है।

रेंजर : इतना ही काफी है। मैं कम-से-कम मैडम को नहीं जाने दूंगा।

सीता : रेंजर साहब ठीक कहते हैं। मैं नहीं जा सकूंगी।

राम : लेकिन यह कैसे हो सकता है। जटायु की पत्नी मेधा बहुत दुखी होगी।

सीता : मैं मेधा को अच्छो तरह जानती हूं। मैं उसे समझा दूंगी।

रेंजर : मैडम की शहर की नौकरी ठीक नहीं है। मैंने इनके लिए यहीं एक जॉब तलाश किया है।

राम : जॉब ! यहां जंगल में कौन-सा जॉब हो सकता है ?

रेंजर : पंचवटी में बहुत बड़ा टूरिस्ट कांप्लेक्स बनने वाला है। सरकार ने पूरी स्कीम को एप्रूव कर दिया है।

राम : पंचवटी में टूरिस्ट कांप्लेक्स। मैंने तो इसकी चर्चा नहीं सुनी।

रेंजर : हां, इसकी पब्लिसिटी नहीं हुई है। लेकिन सब कुछ तय हो गया है। अच्छे-अच्छे होटल, फिल्म स्टूडियो, बस स्टैन्ड और हेलिपैड—पूरा मास्टर प्लान तैयार है।

राम : लेकिन रेंजर साहब, क्या यह पूरा जंगल काट दिया जायेगा ?

रेंजर : इन जंगलों में क्या रखा है। समझिए कि एक मिनि हालिवुड बन रहा है।

सीता : आप किसी जॉब के बारे में कह रहे थे।

रेंजर : हां कई योजना अधिकारियों की नियुक्ति होने वाली है। आपके लिए गोल्डेन चांस है।

सीता : बिना पैरवी के मेरे लिए क्या चांस हो सकता है ?

रेंजर : आपके लिए पैरवी की जरूरत है क्या ? एक तो हरिजन, दूसरे महिला। मुहावरा ही है—एक तो तितलौकी, दूजे चढ़ी नीम।

राम : लेकिन ये तो अपनी जात खो चुकी हैं।

रेंजर : नहीं, हरिजन अंत तक हरिजन रहता है—

वही सुविधाएं, वही असुविधाएं ।

सीता : तो मुझे कहां अप्लाई करना होगा ?

रेंजर : आज वन मंत्री आ रहे हैं। आपको उनको अटेंड करना होगा। स्टेनो जैसा कुछ काम आपके लिए ठीक होगा। अगर मंत्री जी पट गए तो फिर बेड़ा पार है।

सीता : ठीक है। कोशिश करूंगी।

रेंजर : शाम को लेने आऊंगा। तैयार रहेंगी।

[रेंजर का प्रस्थान]

राम : बात कुछ जंच नहीं रही है। तुम सरकारी नौकरी करोगी ?

सीता : कोई चारा नहीं है। हम एक साथ कितने मोर्चों पर लड़ सकते हैं।

राम : तुम्हारे ऊपर भी एक ग्रह है। एक महत्वाकांक्षा तुम्हें चैन से बैठने नहीं देती।

सीता : मुझमें जीने की इच्छा है। मैं उसके लिए जोखिम उठाने को तैयार हूं।

[जटायु का प्रवेश]

जटायु : दादा, बड़ी भयानक खबर है। यह पूरा जंगल कटने जा रहा है।

राम : मैंने भी सुना है।

जटायु : सुना है कि यहां होटल और सनीमा खुलेगा। गोरे लोग आयेंगे।

राम : हां, ऐसी ही खबर है।

जटायु : दादा, अब हमारा क्या होगा ? हम तो बिलकुल बरबाद हो जायेंगे !

सीता : रेंजर साहब तो कहते थे कि इस क्षेत्र का

विकास होगा। स्थानीय लोगों को विशेष सुविधाएं मिलेंगी।

जटायु : रेंजर एक नम्बर का झूठा है। दीदी, तुम सोचती हो कि इन पंचतारा होटलों में हमें जगह मिलेगी। हम तो दूध की मक्खी की तरह निकाल कर फेंक दिए जायेंगे।

राम : हां, इस तरह के विकास से सिर्फ कुछ ही लोगों को लाभ पहुंचता है।

जटायु : हमारी झोंपड़ियों को उजाड़ कर हम सभी को सड़क पर ढकेल दिया जायेगा। हम नये-नये ठेकेदारों की बंधुआ मजदूरी करेंगे। हमारी स्त्रियों पर असह्य अत्याचार होंगे। दादा, उसके बाद क्या बच जायेगा ?

राम : हम घूम-फिर कर रावण की कथा को दुहरा रहे हैं। रावण ने भी ऋषियों के आश्रम उजाड़े थे। उसने भी सोने की लंका बसाई थी।

जटायु : दादा, तुम्हीं ने कहा था कि जंगलों के कटने से जमीन की जीवन-शक्ति चुकती जा रही है। रेगिस्तान के चरण आगे बढ़ते जा रहे हैं। ये हरे-भरे खेत धीरे-धीरे बंजर हो जायेंगे। उनमें कुछ नहीं उगेगा। कभी कुछ नहीं उगेगा।

राम : प्रकृति के साथ बहुत छेड़-छाड़ की गयी है। अब प्रकृति अपना बदला ले रही है।

जटायु : नहीं दादा, मैं इन जंगलों को नहीं कटने दूंगा। जटायु पहले भी रावण का मुकाबला कर चुका है। जटायु इस बार भी रावण का मुकाबला करेगा।

[जटायु का प्रस्थान। एक फारेस्ट गार्ड का प्रवेश]

गार्ड : मैडम को रेंजर साहब ने बुलाया है।

सीता : क्या कहते हो ?

राम : सीता एक बार स्वर्ण मृग के प्रलोभन में पड़ी थी। सीता फिर ऐसे ही प्रलोभन के पीछे भाग रही है। उसे रोकना संभव नहीं लगता।

सीता : राम, हम सब रास्तों की तलाश कर रहे हैं। हम हर नये विकल्प को कैसे अस्वीकार कर सकते हैं। जिन्दगी के अपने जोखिम हैं। हम उनसे कैसे बच सकते हैं !

[फारेस्ट गार्ड के साथ सीता का प्रस्थान]

[प्रकाश बुझता है]

दृश्य-2

स्थान : डाक बंगले का अग्रिम भाग।

[रेंजर के साथ प्रोड्यूसर, डाइरेक्टर और ऐक्टर का प्रवेश]

प्रोड्यूसर : रेंजर साहब, ये पंचवटी की जायदाद तो लाजवाब है।

रेंजर : सरकार ने पंचवटी को तीन सेक्टर में बांटा है। एक में फिलम कांप्लेक्स, दूसरे में होटल

कांप्लेक्स तीसरे सेक्टर में बस-स्टैंड, हेलीपैड और बाज़ार की योजना है।

प्रोड्यूसर : दाम कहां तक लगेगा ?

रेंजर : दाम कुछ नहीं है। टेबुल के ऊपर एक करोड़। टेबुल के नीचे एक करोड़। कुल दो करोड़।

डाइरेक्टर : सेठ जी, सौदा पक्का करो। यहां शानदार स्टूडियो बनेगा! अब आउटडोर शूटिंग के लिए कश्मीर नहीं जाना होगा।

ऐक्टर : नो दादा, डोंट से दैट। आउटडोर के नाम पर पहाड़ों पर थोड़ी हॉलिडेइंग होती है।

प्रोड्यूसर : हालीडे या हनीमून ?

ऐक्टर : अरे सेठ जी, ऐसा क्यों बोलते हो ? हम लोगों को तो बासी माल मिलता है। पहिले प्रोड्यूसर, फिर डाइरेक्टर—अंत में बेचारा हीरो!

डाइरेक्टर : नो डीयर, हम लोग बेचारे नहीं हैं। बेचारी तो पब्लिक है। पैसा वही देती है पर हम उसे क्या देते हैं—कश्मीर के कुछ शॉट्स्, हीरोइन के कुछ क्लोज़अपस्…

ऐक्टर : और एक रेप-सीन।

प्रोड्यूसर : नो दादा, अब यह फार्मूला नहीं चलेगा। आपने नहीं देखा, बड़ी-से-बड़ी मल्टी-स्टारस धड़ाधड़ फ्लाप कर रही हैं।

रेंजर : हां सेठ जी, पब्लिक अब नई चीज़ चाहती है। आजकल झुग्गी-झोंपड़ी स्टोरी खूब चलने लगी है।

ऐक्टर : येस दादा, रेंजर साहब ठीक कहते हैं। इस बार कोई झुग्गी-झोंपड़ी मसाला लाओ। देखो,

मैं क्या कमाल दिखाता हूं।

प्रोड्यूसर : मिस्टर हीरो, तुम्हारी चार फिल्में, एक के बाद एक, बाक्स-आफिस पर पिट चुकी हैं। तुमको लोग मिस्टर फ्लाप कहने लगे हैं।

ऐक्टर : सेठ जी, इसमें मेरा क्या कसूर है। आप लोग हर बार गलत लड़की चुनते हैं।

प्रोड्यूसर : गलत लड़की ! ऐसा मत कहो !

ऐक्टर : येस, लोग टीन-एजर हीरोइन चाहते हैं। और आप लोग हर बार बासी माल परोसते हैं।

रेंजर : सेठ जी, इस बार पंचवटी में शूटिंग करो। मैं तुम्हें एक दर्जन लड़कियां दूंगा—ऑल टॉप-लेस ! येस, यही उनका नेचुरल ड्रेस है। सेंसर का बाप भी कुछ नहीं कर सकेगा।

प्रोड्यूसर : हीयर हीयर ! गुड आइडिया !

डाइरेक्टर : सेठ जी, डांसेज़ के लिए तो आदिवासी लड़कियां चल सकती हैं। लेकिन मेन रोल के लिए पढ़ी-लिखी लड़की चाहिए।

ऐक्टर : रेंजर साहब, आपके आफिस में एक नया चेहरा दिखाई पड़ा है।

रेंजर : स्कूल टीचर है। नई नौकरी की तलाश में है। नाम है सीता।

डाइरेक्टर : सीता हो या सावित्री, शी हैज़ ए गुड फेस ऐंड परफेक्ट फिगर।

प्रोड्यूसर : हम लोग उसका ट्रायल ले सकते हैं।

रेंजर : इंटेलेक्चुअल टाइप की लड़की है। आसानी से हाथ नहीं आएगी।

डाइरेक्टर : आप एक बार इंट्रोड्यूज़ तो करा दीजिए।

ऐक्टर : मैं उसको ठीक कर सकता हूं। एक लड़की बहुत नखड़ा करती थी। मुझे दूसरे सीन में उसे थप्पड़ लगाना था। मैंने उसे कसकर तमाचा लगाया। लड़की तिलमिला गई। मैंने उस सीन के बत्तीस रिटेक लिए। लड़की हमेशा के लिए ठीक हो गई।

प्रोड्यूसर : देखो डीयर, सभी जगह तमाचा कारगर नहीं होता। पैसे की मार ज्यादा असरदार होती है।

रेंजर : क्या मतलब ?

प्रोड्यूसर : मेरी तरफ से उसे पांच हजार का चेक और दो फिल्मों का कंट्राक्ट दीजिए। मेरे ख्याल में यह एक अच्छी शुरूआत होगी।

रेंजर : मैं कोशिश करूंगा। पर बात इतनी आसान नहीं है।

प्रोड्यसर : मैं समझ गया। यह आपका दो हजार है। काम पूरा होने पर तीन हजार प्लस।

रेंजर : ठीक है, कोई बात नहीं। लड़की जरूरतमन्द है। उम्मीद है कि मामला पट जायगा।

प्रोड्यूसर : आप कोशिश कीजिए। तब तक हम लोग जंगल का एक और राउंड लगा लेते हैं।

[प्रोड्यूसर, डाइरेक्टर और ऐक्टर का प्रस्थान। होटल का मालिक, इंजीनियर और ठेकेदार का प्रवेश]

रेंजर : आइए, सेठ सोगानी।

मालिक : तुमको मेरा टेलीग्राम मिला था ?

रेंजर : मिला था। मैं आपके स्वागत के लिए तैयार हूं।

मालिक : ये हैं हमारे चीफ इंजीनियर सरन और चीफ कंट्राक्टर मि० गुप्ता।

रेंजर : आप लोगों से मिलकर बहुत खुशी हुई।

मालिक : मिनिस्टर आ गया ?

रेंजर : अब आया ही चाहते हैं। आज उनका यहीं नाइट हाल्ट है।

मालिक : गुड ! आज लीज़ पेपर पर साइन हो जायगा।

रेंजर : जी हां, सब कुछ हो जायगा !

मालिक : गुड ! लीज़ एमाउंट क्या तय हुई है ?

रेंजर : टेबुल के ऊपर एक करोड़। टेबुल के नीचे एक करोड़।

मालिक : गुड़, मैं ऐसी साफ-साफ बातें बहुत पसंद करता हूं।

रेंजर : जी, यहां आपको सभी चीजें साफ-साफ मिलेंगी। हम लोग कारोबार में हद दर्जे की ईमानदारी बरतते हैं।

मालिक : गुड़ ! गुड स्मार्ट ब्वाय !

रेंजर : आपने साइट देखा है ?

मालिक : येस। साइट तो सुपर्ब है। क्यों इंजीनियर साहब ?

इंजीनियर : यस सर, सिंपली सुपर्ब।

मालिक : आपने डिजाइन बना लिया ?

इंजीनियर : सर, हमने अमेरिका के लिबर्टी कांटिनेंटल और जापान के फूजीयामा—दोनों की डिजाइनें मंगवा ली हैं। अब आपको चूज़

करना है।

मालिक : नो, मैं किसी होटल का ट्रू रिप्लिका नहीं चाहता। दोनों की डिजायनें मिला दीजिये। एक नई डिजाइन निकल आयेगी।

इंजीनियर : ठीक है सर, कोशिश करूंगा।

मालिक : देखिए होटल का मुखड़ा इंडियन होना चाहिए। इसे अजंता, कोनारक या खजुराहो का लुक देना होगा।

रेंजर : सेठ जी, आप सचमुच बहुत ऊंचे टेस्ट के आदमी हैं।

मालिक : इतना ही नहीं, मैं यहां कुछ ऐसी व्यवस्था करना चाहता हूं जो दुनिया में कहीं नहीं है—वन गर्ल अटेंडेंट फार एवरी रूम !

रेंजर : सेठ जी, इसमें मैं आपको हेल्प करूंगा। मैं आपको तीन सौ आदिवासी लड़कियां दूंगा—ऑल टापलेस।

मालिक : वंडर फुल ! तब हम असली खजुराहो बिल्ड अप कर लेंगे। पूरे वर्ल्ड से टूरिस्ट आयेगा।

ठेकेदार : सेठ जी आप जैसे लोग फील्ड में बहुत कम हैं। आपका होटल वर्ल्ड में ए वन हो जाएगा।

मालिक : अच्छा रेंजर साहब, डाक बंगला में एक खूबसूरत चेहरा देखा। टाइप कर रही थी।

रेंजर : हां सर, नयी स्टेनो है। लीज का डाक्यूमेंट टाइप कर रही है।

मालिक : मैं होटल का सारा मैनेजमेंट लड़कियों के हाथ में देना चाहता हूं।

ठेकेदार : हां सर, बहुत अच्छा आइडिया है।

मालिक : लड़की का नाम क्या है ?

रेंजर : सीता देवी ।

मालिक : यह तो बहुत पुराने डिजाइन का नाम है। कोई बात नहीं, हम उसको नया नाम देंगे।

रेंजर : सर, लड़की बहुत आसान नहीं है। भाषण देने वाला मॉडल है।

मालिक : कोई बात नहीं। हमने भाषण देने वाला लोग बहुत देखा है। हम उनकी कीमत जानता है।

ठेकेदार : हां सर, हर चीज़ की कीमत होती है—दस परसेंट फेस के लिए, दस परसेंट फिगर के लिए और दस परसेंट भाषण के लिए !

[सब हंसते हैं]

मालिक : ठीक है, रेंजर साहब ! हम उसको चीफ रिसेप्शनिष्ट बना देंगे। लो यह पांच हजार का चेक और सौदा पक्का कर लो।

रेंजर : लेकिन सेठ जी…

मालिक : मैं समझ गया।—भई मैं तो पूरी रकम एड-वांस देता हूं। लो यह तुम्हारे पांच हजार। अब तो खुश हो न।

रेंजर : थैंक यू, सेठ जी !

मालिक : ठीक है, रेंजर साहब ! हम लोग साइट का एक चक्कर लगा कर आते हैं।

[होटल-मालिक, इंजीनियर एवं ठेकेदार का प्रस्थान]

नेपथ्य से आवाज़ : इंकलाब जिन्दाबाद ! वन मंत्री जिन्दाबाद ! रावणेश्वर शर्मा जिन्दाबाद !

[वनमंत्री, मंत्री की पत्नी और दो चमचों का प्रवेश। रेंजर वनमंत्री को माला पहनाता है]

रेंजर : सर, पंचवटी वनखण्ड में आपका स्वागत है !

वनमंत्री : देखता हूं कि तुमने काफी भीड़ जुटा ली है।

रेंजर : सर, ये सब आपके दर्शन के लिए आए हैं।

मंत्री : अच्छा-अच्छा ! बहुत अच्छा है ! लो इनसे मिलो, देवी-गृहलक्ष्मी-अर्धांगिनी श्रीमती मंदोदरी शर्मा ! प्रोजेक्ट का शिलान्यास इन्हीं के हाथों होगा।

रेंजर : देवी जी का स्वागत है !

मंत्री : इनको तो तुम जानते ही होगे। हमारे प्राइवेट सेक्रेटरी चौबे और पी॰ ए॰ दुबे। वैसे मैं इन्हें चंगू जी, मंगू जी कहता हूं।

रेंजर : हां सर, इन लोगों को कौन नहीं जानता है।

मंत्री : और मंदोदरी, ये हैं रेंजर, नटवर लाल ! बड़े काम के आदमी हैं।

मंदोदरी : सो तो देख रही हूं।

[मंदोदरी का प्रस्थान]

मंत्री : लाल, होटल और फिल्म के लोग आ गए ?

रेंजर : हां सर, आ गए हैं।

मंत्री : उन लोगों ने लोज की शर्तों को समझ लिया है।

रेंजर : हां सर, उनको सब कुछ बता दिया गया है। उन्होंने मंजूर कर लिया है।

मंत्री : ठीक है। आज लीज़ साइन हो जाना चाहिए। कल सुबह शिलान्यास का मुहूर्त है।

रेंजर : ठीक है सर। कहीं कोई दिक्कत नहीं है।
मंत्री : जंगल के लोग प्रोटेस्ट तो नहीं कर रहे हैं।
रेंजर : नहीं सर, किसकी हिम्मत है! मुंह खोलने वाले का सिर कुचल दिया जायगा।
मंत्री : ठीक है। तुमने बहुत अच्छा काम किया है।

[मंदोदरी का प्रवेश]

रेंजर : सर, एक गरीब लड़की है। जॉब खोज रही है।
मंत्री : कैसी लड़की है ? क्वालिफिकेशन ठीक है न ?
रेंजर : सर, लड़की पहले स्कूल टीचर थी। जात की हरिजन है।
मंत्री : तुरत बुलाओ ! काम की चीज़ लगती है।

[रेंजर जाकर सीता को ले आता है]

मंत्री : ओ माई गॉड। तुम सचमुच हरिजन हो ? शकल से तो नहीं लगतीं।
सीता : जी, मैं हरिजन परिवार में ही पैदा हुई थी। इंटरकास्ट मैरेज किया है।
मंत्री : स्कूल की नौकरी क्यों छोड़ी ?
सीता : छोड़ी नहीं, छोड़ना चाहती हूं। लोगों का व्यवहार ठीक नहीं है।
मंत्री : क्या नाम है ?
सीता : सीता देवी।
मंत्री : देखो लड़की, कहीं काम करना हो तो एडजस्ट करना होगा। यह सीता-सावित्री कांप्लेक्स नहीं चलेगा।
रेंजर : सर लड़की बहुत जरूरत मंद है। मैंने इसे वादा कर दिया है। लीज़ का डाक्यूमेंट यही तैयार

कर रही है ।

मंत्री : ठीक है आज इसे काम करने दो। इसके बारे में कल तय करूंगा।

[रेंजर और सीता का प्रस्थान]

मंदोदरी : जहां खूबसूरत चेहरा दिखा, ढल गए।

मंत्री : तुम नहीं जानतीं। लड़की नहीं सोने की खान है।

मंदोदरी : ए लड़की ! सुनो !

[सीता का प्रवेश]

सीता : आपने मुझे बुलाया है ?

मंदोदरी : हां, तुम्हीं से पूछ रही हूं ! अब तक कितने घाट का पानी पी चुकी हो ?

सीता : बहन जी, घाट तो शहरों में होते हैं। यहां हम लोग झरनों का शुद्ध जल पीते हैं। आप भी पियेंगी ?

मंदोदरी : नहीं मुझे जरूरत नहीं है। मैं सिर्फ मिनरल वाटर पीती हूं।

[सीता का प्रस्थान]

मंदोदरी : मुझे यह लड़की ठीक नहीं लगती ।

मंत्री : लड़की बिलकुल ठीक है। मुझे इस लड़की की सख्त जरूरत है। मैं इसे कल स्टेनो की पोस्ट पर नियुक्त कर दूंगा।

मंदोदरी : क्या मंत्री महोदय के हरम में कोई जगह खाली हुई है।

मंत्री : तुम कैसी बातें करती हो। जानती हो, यह लड़की हरिजन है।

मंदोदरी : तो इससे क्या हुआ ?

मंत्री : आज शक्ति के शतरंज में हरिजन एक जबरदस्त मोहरा है। फिर मेरे चुनाव क्षेत्र में हरिजनों की बहुत बड़ी संख्या है।

मंदोदरी : मैं इस किस्से को कई बार सुन चुकी हूं।

मंत्री : मैं साफ-साफ देख रहा हूं। लड़की वस्तुतः एक पोलिटिकल एटमबम है। पढ़ी-लिखी है, फिल्म स्टार की तरह सुन्दर है…

मंदोदरी : और आसानी से सुलभ है।

मंत्री : तुम तो बिना वजह भड़क रही हो!

मंदोदरी : क्योंकि मैं तुम्हारा इतिहास जानती हूं। हर बार तुम एक लड़की को पिक-अप करते हो। हर बार एक नए स्कैंडल का जन्म होता है और तुम्हारा नाम अखबारों की सुर्खियों में चढ़ता है।

मंत्री : जो भी हो, मैं उसे प्रामिस कर चुका हूं।

मंदोदरी : सुनो, मैं एक बार फिर प्रोटेस्ट कर रही हूं। और इस बार मैं चुप नहीं रहूंगी।

मंत्री : ठीक है। मैंने नोट कर लिया।

[मंदोदरी का प्रस्थान। रेंजर का प्रवेश]

मंत्री : दोनों पार्टीज़ कहां हैं?

रेंजर : साइट देखने गई हैं। आती होंगी।

[फिल्म और होटल के लोगों का प्रवेश]

मंत्री : कहिए सेठ जी, साइट कैसा है?

प्रोड्यूसर : जस्ट सुपर्ब!

होटल का मालिक : हां सर, साइट का क्या कहना है! एक्सीलेंट!

मंत्री : शर्तें मंजूर हैं?

दोनों : हां सर, बिल्कुल मंजूर हैं।

मंत्री : लाल, डाक्यूमेंट तैयार है ?

रेंजर : हां सर, सिर्फ दस्तखत बाकी हैं।

प्रोड्यूसर : सर, यह जंगल कितने दिन में कट जायगा।

मंत्री : अधिक से अधिक छह महीने। छह महीनों में यह जंगल बिलकुल कट कर साफ हो जायगा।

[जटायु का प्रवेश]

जटायु : नहीं-नहीं, यह नहीं होगा ! यह जंगल कभी नहीं कटेगा !

मंत्री : कौन हो, तुम ? तुम्हें यह सब कहने का क्या हक है ?

जटायु : हम लोग जंगल की संतानें हैं। जंगल हमारा घर आंगन, हमारा जीवन, हमारा सब कुछ है। जंगल कट जाने पर हम बिल्कुल बरबाद हो जायेंगे।

मंत्री : सुनो, यह योजना तुम्हीं लोगों के लिए बनी है। यहां नई कालोनी बसाई जा रही है। इसमें किसका फायदा है !

जटायु : क्या आप नहीं जानते कि जंगल कट जाने से मौसम बदल जाता है ! धरती बंजर हो जाती है।

मंत्री : सुनो ये सब किताबी बातें हैं। सच कहो तो इस देश के मौसम को बदलने की जरूरत है। इस योजना से जमीन सोना उगलेगी। हम यहां डालर और पाऊंड की खेती करने जा रहे हैं।

जटायु : नहीं सर, आप हमें मत उजाड़िए ! हमें अपने घर में रहने दीजिए !

मंत्री : हम तुम्हें रहने के लिए मकान देंगे। तुम्हारे लिए नौकरी का कोटा तय कर देंगे।

[जटायु मंत्री के पैर पकड़ लेता है]

जटायु : सर, आप हमारे माई-बाप हैं! गरीब लोगों पर इतना अत्याचार मत कीजिए!

मंत्री : अब तुम जा सकते हो। हमें बहुत-सा काम करना है।

रेंजर : **(जटायु का हाथ पकड़ कर खींचता है)** अब चलो यहां से! निकलो बाहर! निकलो!

जटायु : नहीं, हम इस जंगल को कटने नहीं देंगे! ये पेड़ हमारे भाई हैं। हम इन पेड़ों की रक्षा करेंगे! हमारे कटने के बाद ही आप इन्हें काट सकेंगे!

रेंजर : धमकी देता है! इतनी हिम्मत! मारो साले को!

[सीनियर और जूनियर चमचा मारो! मारो! कहकर दौड़ते हैं। सब मिलकर जटायु पर प्रहार करते हैं]

[मन्दोदरी और सीता का प्रवेश]

मंदोदरी : **आगे (बढ़कर)** यह क्या कर रहे हो! बिलकुल जान से मार डालोगे। छोड़ दो इसको **(जटायु को छुड़ाती है। जटायु से)** जाओ! अपने घर जाओ!

[जटायु का लड़खड़ाते हुए प्रस्थान]

मंत्री : ठीक हुआ! ये लोग लात के देवता हैं। उसी की भाषा समझते हैं।

प्रोड्यूसर : हां सर, पिटाई जरूरी थी।

मंत्री : चलिए, हम लोग कंट्राक्ट की औपचारिकताएं पूरी कर लें।

होटल मालिक : ठीक है, सर—

[फिल्म और होटल ग्रुप के साथ मंत्री का प्रस्थान]

सीता : रेंजर साहब !

रेंजर : मैंने मंत्री महोदय से बात कर लिया है। सब कुछ तय हो गया है।

सीता : लेकिन मैं अब नौकरी नहीं चाहती।

रेंजर : क्यों, इतना जल्दी क्या बदलाव आ गया ?

सीता : मैं यहां ऐडजस्ट नहीं कर पा रही हूं।

रेंजर : मैडम, बात बहुत आगे बढ़ चुकी है।

सीता : नहीं, मैं यह जॉब नहीं कर सकूंगी।

रेंजर : देखो मैडम, यह रावण नगरी है। यहां भीतर घुसने का रास्ता है। बाहर जाने का कोई रास्ता नहीं है।

सीता : आप क्या जोर जबरदस्ती से काम लेंगे ?

रेंजर : हम क्या कर सकते हैं अभी आपको मालूम नहीं है। हम आपको ही नहीं आपके पूरे परिवार को बरबाद कर देंगे। आपकी और आपके पति की एक भी बोटी का पता नहीं लगेगा।

सीता : नहीं, ऐसा मत कहिए !

रेंजर : देखिए, मैं आपके मुंह से आयन्दा कोई गलत बात नहीं सुनना चाहता।

[रेंजर का प्रस्थान]

सीता : लगता है कि मैं सचमुच कैद हो गई। राम तुमने ठीक कहा था ! बिल्कुल ठीक कहा था।

[प्रकाश बुझता है]

तीसरा अंक

दृश्य-1

दृश्य : वही पृष्ठभूमि। दाहिने तरफ एक स्थान पर आग जल रही है।

समय : रात्रि के आठ बजे।

[प्राइवेट सेक्रेटरी और पी० ए० का प्रवेश]

सेक्रेटरी : भतीजे चंगू।

पी० ए० : हां चचा मंगू।

सेक्रेटरी : भतीजे, बात कुछ बन नहीं रही है। हम तो बिल्कुल बंधुआ मजदूर बन गए हैं।

पी० ए० : हां चाचा, इससे तो अच्छा था कि हम लखनऊ चले जाते। छठी-बरही में ताली बजा-बजाकर नाचते-गाते—मेरे अंगने में तुम्हारा क्या काम है।

सेक्रेटरी : भतीजे हम तो यहां भी ताली ही बजा रहे हैं। ताली बजाते-बजाते हाथ की हथेली घिस गई।

पी० ए० : हां चाचा, बक्सा ढोते-ढोते दोनों हाथों में घट्ठा पड़ गया है।

सेक्रेटरी : भतीजे अपनी किस्मत ही खराब है। जरा हाथ तो देख, भाग्य की रेखा क्या कहती है ?

[पी० ए० सेक्रटरी का हाथ देखता है]।

पी० ए० : चाचा !

सेक्रटरी : हां भतीजे !

पी० ए० : चाचा, तुम्हारी भाग्य रेखा तो बिना टिकट जहन्नुम में घुस गई है।

सेक्रेटरी : हां भतीजे, वह और कहां जा सकती है।

पी० ए० : चाचा तुम्हारी संतान-रेखा बहुत प्रबल हैं। तीन दर्जन बच्चे हैं।

सेक्रेटरी : ओ माई गॉड ! भतीजे जरा पत्नी की रेखा तो देख।

पी० ए० : चाचा, तुम्हारे हाथ में पत्नी की रेखा है ही नहीं। नो वाइफ, इन योर लाइफ।

सेक्रेटरी : भतीजे, यह हिसाब किताब तो बड़ा गड़बड़ हो गया। तीन दर्जन बच्चे और नो वाइफ।

पी० ए० : इसमें क्या है ! चाचा तुम किसी अनाथालय के मैनेजर बनोगे।

सेक्रेटरी : ठीक कहा, भतीजे ! हम लोग एक बड़ा अनाथालय ही तो चला रहे हैं।

पी० ए० : चाचा, हम लोगों को कुछ करना चाहिए।

सेक्रेटरी : हां भतीजे, सोच रहा हूं कि ब्रह्मचारी उर्फ सदाचारी उर्फ दुराचारी बाबा से एक टोटका ले लूं।

पी० ए० : उससे क्या होगा ?

सेक्रेटरी : तुरन्त प्रोमोशन होगा।

पी०ए० : चाचा, हम लोगों का प्रोमोशन नहीं हो सकता। हम लोग मन्त्री थोड़े ही बनेंगे।

सेक्रेटरी : क्यों भतीजे, हम लोगों में क्या कमी है ?

पी० ए० : चाचा, यह देश चार पवित्र सिद्धांतों पर चल रहा है—भाईवाद, भतीजावाद, सालावाद और ससुरवाद हम लोगों के लिए कोई उम्मीद नहीं है।

सेक्रेटरी : भतीजे, कल मंत्री जी को पूरा माल मिला है। हम लोगों का हिस्सा कब मिलेगा ?

पी० ए० : चाचा, जरूर मिलेगा। लूट का माल हमेशा ईमानदारी से बंटता है। ईमानदारी से बंटेगा।

सेक्रेटरी : भतीजे, पूरी खुराक नहीं मिल रही है।

पी० ए० : चाचा, हम लोग तो व्यवस्था के चूहे हैं। जो कुछ कुतर सकें, वही हमारा है।

सेक्रेटरी : भतीजे, हमसे अच्छे तो दादा लोग हैं। पूरी मलाई उड़ा जाते हैं।

पी० ए० : दादा, वे तो व्यवस्था के अलसेशियन हैं। बूथ कैप्चर करते हैं। विरोधियों का वध करते हैं।

सेक्रेटरी : भतीजे, आज तो भोजन का दिव्य आयोजन है। पीने के लिए पूरा क्रेट आया है !

पी० ए० : चाचा, सेठों ने पूरा माल दिया है। नई-नई लड़की आई है !

सेक्रेटरी : भतीजे, हम लोगों को क्या फरक पड़ता है। को नृप होय, हमें का हानि।

पी० ए० : चाचा, हम लोगों को भी कुछ न कुछ प्रसाद तो मिलेगा ही। तुलसी इस संसार में लूट सके सो लूट।

[मंत्री और रेंजर का प्रवेश]

मंत्री : अरे चंगू-मंगू क्या हो रहा है ?

पी० ए० : सर, हम लोग रामचरित मानस का पाठ कर

रहे हैं। बड़ा पवित्र ग्रन्थ है।

मंत्री : ठीक है, बहुत अच्छा है। एक बार मैंने भी इस ग्रंथ पर भाषण दिया था।

रेंजर : सर, ड्रिक्स आ गए हैं।

मंत्री : जंगली सूअर आ गया? भाई ड्रिक्स के साथ चखना भी चाहिए न!

रेंजर : हां सर! फारेस्ट गार्ड्स को भेजा गया है। शिकार जरूर मिल जायगा।

मंत्री : सूअर का मीट और ड्रिक्स। मुझे और किसी चीज की जरूरत नहीं है।

रेंजर : ठीक है, सर।

[सीता का प्रवेश]

मंत्री : आओ डीयर।

सीता : सर, कंट्रैक्ट पेपर साइन हो गए, अब मैं जा सकती हूं?

रेंजर : यह कैसे संभव है? कल सुबह शिलान्यास है। आज रात भर काम करना होगा।

मंत्री : देखो डीयर, आज तो जश्न की रात है। हम सभी के लिए खुशी का मौका है।

सीता : मैं घर कह कर नहीं आई हूं।

रेंजर : आपके घर मैसेज भेज देते हैं।

मंत्री : सुनो डीयर, शहर से कई घड़ा अमृत आया है। बिना मोहिनी के देव-दानव सब भूखे-प्यासे रह जायेंगे!

सीता : मुझे क्या करना होगा?

मंत्री : तुम्हारे हाथ में सब कुछ है। आज तुम्हारे ही हाथों से अमृत बंटेगा!

सीता : यह कैसे हो सकता है ?

रेंजर : अच्छी तरह हो सकता है। इधर आइए, मैं आपको बताता हूं।

[दोनों एक कोने में जाते हैं। बाकी सब फ्रीजकर जाते हैं]

सीता : यह सब क्या है ?

रेंजर : मैडम, यह रावण नगरी है। हमेशा याद रखिए यहां आने का रास्ता है। जाने का कोई रास्ता नहीं है।

सीता : नहीं, मैं यह सब नहीं कर सकूंगी !

रेंजर : मैडम, सामने की आग में एक शिकार भूना जाएगा। सावधान रहना, उसकी जगह तुम्हारे पति का शव हो सकता है !

सीता : नहीं-नहीं, हम लोगों को इस तरह बरबाद मत कीजिए !

रेंजर : जाइये, ठीक से बिहेव कीजिए ! कोई शिकायत नहीं होनी चाहिए।

[सीता अनमनी सी डाक बंगले में जाती है रेंजर का प्रस्थान। अन्य सभी लोगों का प्रस्थान। मंच के दाईं ओर से राम, बाईं ओर से जटायु का प्रवेश]

जटायु : दादा !

राम : एक पहर रात बीत गई। सीता का पता नहीं है।

जटायु : दादा, हमने दीदी को डाक बंगले में देखा था। मंत्री महोदय से बात कर रही थीं।

राम : सीता ने धैर्य खो दिया। देखना है कि एक

सोने के मृग की तलाश उसे कहां तक ले जाती है !

जटायु : दादा, जंगल कटने का फैसला हो गया। कागज़ पर दस्तखत भी हो गया।

राम : बड़े दुख की बात है। इसके खिलाफ जनमत तैयार करना होगा।

जटायु : दादा, अब समय बहुत कम है। जंगल को बचाना ही होगा।

राम : सुनता हूं कि कल प्रोजेक्ट का शिलान्यास होगा।

जटायु : दादा, हम जंगल को कटने नहीं देंगे। इसके लिए हम जीवन भी देने को तैयार हैं।

राम : मुझे तुम लोगों के साथ गहरी सहानुभूति है।

जटायु : दादा, आज रात हमारी मीटिंग है। चलो, हमें तुम्हारी जरूरत है।

राम : इस समय मेरा मन बहुत चंचल है। आज मुझे छोड़ दो।

[जटायु का प्रस्थान। राम का प्रस्थान]

(प्रकाश बुझता है)

दृश्य-2

[मंत्री के साथ रेंजर का प्रवेश]

मंत्री : लाल, शिकार का इन्तजाम हो गया ?

रेंजर : सर, फारेस्ट गार्ड जंगल में गए हैं। मैं भी देखता हूं।

मंत्री : ठीक है। तब तक ड्रिंक्स सर्व करा दो। लड़की तैयार है न ?

रेंजर : हां, सर, बिलकुल तैयार है !

[फिल्म एवं होटल ग्रुप का प्रवेश]

मंत्री : गुड, सब लोग आ ही गए ! एक राउंड ड्रिंक्स् हो जाए !

रेंजर : ठीक है, सर !

[ट्रे में बोतल और गिलासों के साथ सीता का प्रवेश]

मंत्री : आओ डीयर, आज हमारे जश्न की रात है।

[सीता गिलास में शराब डालती है]

मंत्री : तू साकी-ए-मयखाना है, मैं रिंद बलानोश
मेरे लिए मयखाने को पैमाना बना दे।

सेक्रेटरी : वाह सर, क्या कहा है !

पी० ए० : हां सर, बड़ी ऊंची चीज़ है !

मंत्री : आइये हम पंचवटी प्रोजेक्ट के नाम पर पहला जाम पिएं !

[सब जाम उठाते हैं]

सब एक साथ : नेता जी, जिन्दाबाद !
वन मंत्री, जिन्दाबाद !

मंत्री : नहीं भाई, सब लोग बोलो—पंचवटी प्रोजेक्ट

जिन्दाबाद !

सब एक साथ : पंचवटी प्रोजेक्ट जिन्दाबाद !

[सीता प्रोड्यूसर के गिलास में शराब डालती है]

प्रोड्यूसर : हां डीयर, भर दो पूरा जाम !

मस्त कर दे मुझे साकी, मगर इस शर्त के साथ;
होश इतना ही रहे, बस कि तुझे याद करूं !

[सब लोग वाह-वाह करते हैं। सीता होटल मालिक के गिलास में डालती है]

होटल-मालिक : आओ डीयर !

वह और होंगे, जो पीते हैं खुदी के लिए,
मुझे तो चाहिए थोड़ी-सी जिन्दगी के लिए।

ऐक्टर : अरे-भाई, हम भी इस महफिल में हैं। यह कैसी बज्म है और कैसी इसकी साकी है,
शराब हाथ में है और पिला नहीं सकती !

डाइरेक्टर : अरे भाइयो तुम सब यह क्या हंगामा कर रहे हो ?

ऐक्टर : हंगामा कहां है डाइरेक्टर साहब।

हंगामा है क्यों बरपा, थोड़ी-सी जो पी ली है,
डाका तो नहीं डाला है, चोरी तो नहीं की है।

ठेकेदार : यारो मैं यहां बिलकुल चुप हूं।

रह गई जाम में, अंगड़ाइयां ले ले के शराब,
मुझसे मांगी न गई, उनसे पिलाई न गई।

[सीता बारी-बारी से सबको सर्व करती है। सब फ्रीज कर जाते हैं।]

(प्रकाश बुझता है)

दृश्य-3

[मंच के पृष्ठ भाग में आदिवासी एक-एक कर एकत्र होते हैं। सबके हाथों में मशाल है।]

जामवंत : सुग्रीव, अभी तक जटायु नहीं आया। दो पहर रात बीत चुकी है।

सुग्रीव : चाचा, जटायु राम भैया को बुलाने गया है। हम किसी भी निर्णय के पहले उनकी राय चाहते हैं।

हनुमान : दादा, क्या राम भैया आयेंगे। मुझे उम्मीद नहीं है।

जामवंत : ऐसा क्यों कहते हो। राम भैया बहुत विचार-शील हैं। उन्होंने हमें कितनी अच्छी-अच्छी बातें बताई हैं।

हनुमान : दादा, किताबों में बहुत अच्छी-अच्छी बातें लिखी रहती हैं। लेकिन केवल समस्यों को जान लेने से ही समाधान नहीं निकलता।

सुग्रीव : हां हनुमान भैया, ये पढ़े-लिखे लोग शरीर और मन से बहुत दुर्बल होते हैं। सब कुछ जानकर भी ये लड़ाई में शामिल नहीं होते।

हनुमान : सुग्रीव, इतिहास की हरेक लड़ाई हम लोगों ने ही लड़ी है। राम-रावण युद्ध में हमारा ही खून बहा था। गोप परिवारों के बिना कृष्ण का ही क्या अस्तित्व था। शंकर तो स्वयं प्रकृति के पुत्र थे। शंकर को हमने ही देवाधि-देव बनाया था।

[जटायु का प्रवेश]

सुग्रीव : क्या हुआ, जटायु भैया।

जटायु : राम भैया नहीं आ सके ! सीता के अपहरण से उनके शोक का अन्त नहीं है।

जामवंत : ठीक है ! अब हम अपनी ही शक्तियों को संयोजित करें। लगता है कि ये लड़ाई हमें अकेली ही लड़नी पड़ेगी।

सुग्रीव : दादा, हम लोगों को सामूहिक अनशन करना चाहिए। कल सुबह हम हजारों की संख्या में डाक बंगला के सामने अनशन कर बैठ जायें।

हनुमान : नहीं सुग्रीव, इससे कोई फायदा नहीं है। हम तो साल भर अनशन ही करते रहते हैं। हमारी भूख से सरकार की एक ईंट भी नहीं खिसकती।

सुग्रीव : जटायु भैया, चाहे जो भी हो, हम लोग जंगल कटने नहीं देंगे।

हनुमान : हां भैया, जंगल का कोना कोना हमारे लिए पवित्र है। आज रावण की सेना फिर एक बार हमारी झोंपड़ियों को उजाड़ने आ गई है।

[मशाल लेकर जटायु की पत्नी मेधा का प्रवेश]

मेधा : नहीं दादा, हम जंगल को काटने नहीं देंगे। जंगल के पेड़ हमारे परिवार के सदस्य हैं। ये हमारे साथ पले हैं। हम इन्हें कभी मरने नहीं देंगे।

हनुमान : मेधा बहन ठीक कहती हैं। पंचवटी की रक्षा हमारे लिए जीवन-मरण का प्रश्न है !

सुग्रीव : लेकिन हम उनसे कैसे लड़ सकते हैं ? उनके

पास अपार शक्ति है। अपार साधन हैं। हमारे पास कुछ नहीं है।

मेधा : नहीं भैया, ऐसा मत कहिए। हमारे पास संकल्प है। इसी संकल्प के सामने सोने की लंका जल गई थी।

सुग्रीव : तब हमें क्या करना चाहिए ?

मेधा : हम सभी लोग पेड़ों की रक्षा करेंगे। हरेक पेड़ के पास एक रक्षक रहेगा। हम उनसे कहेंगे—पहले हमें काटो, फिर पेड़ों को छूना।

सुग्रीव : मान लो कि उन्होंने हमें ही काटना शुरू कर दिया तो ?

मेधा : तो क्या हुआ ? धरती पर निर्दोषों का रक्त गिरते ही एक भूकंप का जन्म होगा। ये सारे सोने-चांदी के महल गिरकर चूर-चूर हो जायेंगे। एक नई व्यवस्था का जन्म होगा।

सुग्रीव : ठीक है बहन, हमें मंजूर हैं। अब हमें अपने नायक का चयन कर लेना चाहिए। चाचा जामवंत हमारे बीच सबसे वयोवृद्ध और अनुभवी हैं।

जामवंत : नहीं सुग्रीव, युद्ध के लिए युवा नायक होना चाहिए। जटायु हमारा नेतृत्व करेगा।

हनुमान : ठीक है, हमें मंजूर है।

जामवंत : जटायु, पंचवटी में दूर-दूर तक डुग्गी पिटवा दो। लोग कल सुबह जंगल में एकत्र हो जाएं। हरेक पेड़ के पास एक प्रहरी—यही हमारी लड़ने की शैली होगी।

जटायु : ठीक है, चाचा। आज हमारा महुआ पर्व था।

लेकिन कल महुआ के पेड़ों से सुनहरे फलों की जगह हमारे कटे हुए सिर गिरेंगे।

हनुमान : भैया, इसमें दुख की क्या बात है। यह तो हमारे लिए गौरव की बात है। यह बलिदान का परब होगा।

जटायु : नहीं हनुमान भैया, हमें दुख क्यों होगा ? जाओ भाइयो, सब लोग जंगल में फैल जाओ। हमारा संदेश हरेक झोंपड़ी में पहुंच जाना चाहिए।

हनुमान : हां भैया, हम सब जाते हैं। जटायु भैया की जय।

[सब मिलकर जय बोलते हैं। सब फ्रीज कर जाते हैं। नेपथ्य से डुग्गी बजने की आवाज़। प्रकाश बुझता है)

दृश्य-4

[बन्दूक लेकर फारेस्ट गार्ड और रेंजर का प्रवेश]

रेंजर : रामसिंह शिकार मिला ?

गार्ड : सर, खोज रहे हैं। आज जंगली लोगों का परब है। मांदल की आवाज से जंगली जानवर इधर-उधर भाग गए हैं।

रेंजर : लोग इन्तजार कर रहे हैं। उन्हें कब तक बैठा कर रखा जा सकता है।

गार्ड : क्या करूं सर ! खोज रहा हूं।

रेंजर : चलो, मैं भी तुम्हारे साथ चलता हूं। एक अदद सूअर लाना ही होगा !

[रेंजर और गार्ड का प्रस्थान । जटायु का प्रवेश। बेचैन-सा टहलता है । मंदोदरी का प्रवेश]

जटायु : कौन है ?

मंदोदरी : मैं हूं मंदोदरी । क्या इससे भी अधिक परिचय की जरूरत है ?

जटायु : नहीं मेम साहब, आपको कैसे भूल सकता हूं। आपने मुझे जीवन दिया है ।

मंदोदरी : मैंने क्या किया । वह तो मेरा कर्त्तव्य ही था ।

जटायु : मेम सहाब, रात में अकेले घूमना ठीक नहीं है। जंगल में खूंखार जानवर हैं ।

मंदोदरी : सुनती हूं कि रात में ही अच्छा शिकार मिलता है ।

जटायु : क्या आप शिकार करने आई हैं ?

मंदोदरी : अभी तो तलाश कर रही हूं । हो सकता है कि मैं ही शिकार बन जाऊं ।

जटायु : इतना खतरा मोल मत लीजिए । कम से कम एक फारेस्ट गार्ड को अपने साथ रखिए ।

मंदोदरी : मुझे फारेस्ट गार्ड की जरूरत नहीं है । मैं तुमसे बात करने आई हूं ।

जटायु : यह मेरा सौभाग्य है । मैं आपका कैसे स्वागत करूं ?

मंदोदरी : मुझे किसी स्वागत की जरूरत नहीं है ।

जटायु : आज हमारा महुआ परब था। लेकिन एक निर्णय ने सबको दुखी कर दिया है ।

मंदोदरी : तुमको भी इस निर्णय का दुख है ।

जटायु : मेम साहब, जंगल हमारा घर आंगन है।

हमारा जीवन है। जंगल कट जाने से हमारे पास क्या रह जाएगा !

मंदोदरी : तुमने पंचवटी प्रोजेक्ट का नाम सुना है ? यहां पांच तारा होटल बनेगा। फिलम का स्टूडियो बनेगा।

जटायु : सुना है। सब कुछ सुना है।

मंदोदरी : इस होटल में मेरा चार आना हिस्सा है। स्टूडियो में भी मेरा शेयर है।

जटायु : मेम साहब, इन बातों का किसको पता लगता है। ये मामले तो रात के अंधेरे में तय होते हैं।

मंदोदरी : हां, इसीलिए मैं रात को अंधेरे में आई हूं। सुनो, तुमको मेरा सेक्रेटरी और बिजनेस पार्टनर बनना होगा !

जटायु : मेम साहब, यह आप क्या कह रही हैं ?

मंदोदरी : मेरे पति ने एक हरिजन लड़की को अपना स्टेनो नियुक्त किया है। मुझे भी एक आदिवासी नौजवान की जरूरत है।

जटायु : सीता बहन के बारे में आप गलत ढंग से सोच रही हैं।

मंदोदरी : मुझे सब मालूम है। मैं अपने पति को अच्छी तरह से जानती हूं।

जटायु : मेम साहब, मैं यह काम नहीं कर सकूंगा।

मंदोददी : मैं तुम्हें एक ऐसे क्लब का मेम्बर बना रही हूं जिसमें सिर्फ दो मेम्बर होंगे मैं और तुम, तुम और मैं—एक स्त्री, एक पुरुष।

जटायु : लेकिन मेम साहब··· ।

मंदोदरी : किसी बात की फिक्र मत करो। तुम्हें अपार

धन मिलेगा। सुखों की सीमा नहीं रहेगी।

जटायु : मेम साहब, क्या आप मुझे खरीदने आई हैं।

मंदोदरी : नहीं, मैं स्वयं बिकने आई हूं। तुम जिस आत्म-विश्वास के साथ मंत्री महोदय के पास गए थे वह मुझे बहुत अच्छा लगा। वह एक शेर की मुद्रा थी।

जटायु : मेम साहब, आपके पास आदमियों की क्या कमी है ?

मंदोदरी : वे सब मरे हुए लोग हैं। मुझे एक जिन्दा आदमी की जरूरत है।

जटायु : मेम साहब, आपको क्या जवाब दूं, समझ नहीं पा रहा हूं।

मंदोदरी : तुम्हारे भाग्य में अपार सुख है। स्वर्ग की एक उर्वशी तुम्हारे दरवाजे पर दस्तक दे रही है। जटायु, इस सारे सुख को स्वीकार करो !

जटायु : मेम साहब मेधा मेरी पत्नी है। वह मुझे बहुत प्यार करती है।

मंदोदरी : तुम एक जंगली औरत से मेरी तुलना कर रहे हो।

जटायु : मेम साहब, आप गलत समझ गईं। लेकिन मैं अपने घर, अपने परिवार को कैसे छोड़ सकता हूं।

मंदोदरी : सुनो, मैं रात भर इन्तज़ार नहीं कर सकती। तुम्हें जल्दी ही फैसला करना होगा।

जटायु : मेम साहब, आपका यहां रहना ठीक नहीं है। लौट जाइए। आपको लोग खोज रहे होंगे।

मंदोदरी : तुमने मेरा अपमान किया है। तुम्हें इसकी

कीमत अदा करनी होगी।

जटायु : मेम साहब, आप मुझे गलत समझ रही हैं।

मंदोदरी : मैं समझती थी कि तुम पढ़े-लिखे समझदार हो। मुझे क्या पता था कि तुम सिर्फ एक जंगली सूअर हो।

जटायु : शायद आप ठीक कहती हैं।

नेपथ्य से रेंजर की आवाज : मेम साहब ! मेम साहब !

मंदोदरी : बचाओ ! बचाओ !

[दौड़ते हुए रेंजर का प्रवेश]

मंदोदरी : (रोते हुए) यह जंगली आदमी मेरी इज्जत लूटना चाहता है।

जटायु : मेम साहब।

रेंजर : इतनी हिम्मत। सूअर का बच्चा। रेंजर सीटी [बजाता है। कई फारेस्ट गार्ड दौड़ते हुए आते हैं।]

मंदोदरी : किल हिम।

[रेंजर और फारेस्ट गार्ड जटायु को हंटर से मारते हैं। जटायु दम तोड़ देता है]

गार्ड : सर, लगता है कि मर गया। इसे शेर की मांद के पास डाल देना चाहिए।

रेंजर : नहीं, इसकी जरूरत नहीं है। हमें एक जंगली सुअर की तलाश थी। इसे ही काले कपड़े में लपेट कर आग में डाल दो।

[सब लाश को उठाकर ले जाते हैं]

(प्रकाश बुझता है)

दृश्य-5

दृश्य : आग के आस-पास।

[आग के पास मंत्री एवं सभी लोग शराब पी रहे हैं]

[रेंजर का प्रवेश]

मंत्री : लाल, शिकार मिल गया।

रेंजर : हां सर मिल गया है। सूअर का बच्चा था।

मंत्री : ठीक है। अच्छी तरह आग में भूनकर तैयार करो।

[सब फ्रीज कर जाते हैं रेंजर जाने को तैयार होता है सीता का प्रवेश]

सीता : सुनिए, आपने जिसे आग में डाला है, वह जंगली जानवर नहीं है। सच बताइए कि आपने किसको मारा है ?

रेंजर : मैडम, बहुत बढ़िया शिकार मिला है। इसका नरम-नरम मांस तुमको बहुत अच्छा लगेगा।

सीता : सच बताओ कि यह किसका शव है ?

रेंजर : तुम पूछती हो तो बताता हूं। जिस जंगली ज़ानवर को मारा गया है उसका नाम है जटायु।

सीता : जटायु। तुमने जटायु भैया की हत्या की है। यह जघन्य अपराध है। ईश्वर तुम्हें कभी माफ नहीं करेगा।

रेंजर : सुनो मैडम, अगर तुमने मुंह खोला। तो बिलकुल बरबाद हो जाओगी। यहां आने का

रास्ता है। रावण नगरी से जाने का कोई मार्ग नहीं है।

[रेंजर का प्रस्थान]

(प्रकाश बुझता है)

दृश्य-6

[राम अपनी झोंपड़ी के बाहर शंकर की पूजा कर रहा है]

राम : नमामि शर्माशान निर्वाण रूपं
विभु व्यापकं ब्रह्म वेदस्वरूपं,
निजं निगुणं निर्विकल्पं निरीहं
चिदाकाशमाकाश वासं भजे अहं।

हे शंकर, जिस प्रकार वन का मृग शिकारियों के बीच घिर कर असहाय हो जाता है। उसी तरह मैं समस्याओं में घिर कर किंकर्तव्य-विमूढ़ हो गया हूं।

[स्वामी शंकर देव का प्रवेश]

शंकर देव : उठो राम।

राम : (आंख खोलते हुए) कौन ?

शंकर देव : राम, मैं भगवान् शंकर नहीं, तुम्हारे बचपन का गुरु शंकर देव हूं। तुम्हारी आवाज सुनकर इधर आ गया।

राम : लेकिन गुरुदेव, आपका यह साधू वेश।

शंकर देव : सेवा से अवकाश लेने के बाद मैंने समाज-सेवा का मार्ग अपनाया। आजकल इस क्षेत्र का

भ्रमण कर रहा हूं।

राम : गुरुदेव, मैं संकट में हूं। बहुत कठिन परीक्षण काल से गुजर रहा हूं।

शंकरदेव : राम मैंने सब कुछ सुना है। यह तुम्हारा नहीं, पूरी पीढ़ी का संकट है।

राम : गुरुदेव, विरोधी शक्तियां बहुत प्रबल हैं। कभी-कभी मैं बुरी तरह से टूट जाता हूं।

शंकरदेव : राम, तुम एकांत में शक्ति की साधना करना चाहते हो। तुम्हें इतिहास की धारा को पहचानना होगा। वही अनन्त शक्ति और ऊर्जा का स्रोत है।

राम : गुरुदेव, शायद, आप परिवर्तन की बात कह रहे हैं।

शंकरदेव : राम, परिवर्तन ही सत्य है, शिव है, सुन्दर है। यही सृष्टि का नियम है। इतिहास की उभरती हुई शक्तियों को पहचानना होगा।

राम : ठीक है गुरुदेव, मेरे मन का संशय दूर हो गया।

शंकरदेव : राज, पूजा से मन की शांति मिल सकती है पर याद रखो कोई देवता तुम्हें अमोव अस्त्र नहीं देने जा रहा है। तुम्हें अपनी चेतना को ही अस्त्र के समान धारदार बनाना होगा।

राम : गुरुदेव, सब कुछ साफ हो गया। मेरा भटकाव समाप्त हो गया।

शंकरदेव : राम, दुखों में डूबी जनता तुम्हें खोज रही है। अपनी भूमिका पहचानो। एक ऐतिहासिक पर्व के साथ तुम्हारा नाम जुड़ने वाला है।

राम : गुरुदेव, आशीर्वाद दो कि मैं अपनी भूमिका के साथ न्याय कर सकूं।

शंकरदेव : तुम यशस्वी होवो।

[शंकरदेव का प्रस्थान]

(प्रकाश बुझता है)

दृश्य-7

स्थान : मंच का बायां भाग। मंच के बीच में मंत्री दल फ्रीज है।

[राम बेचैन-सा टहल रहे हैं। जामवंत, सुग्रीव और हनुमान का प्रवेश]

हनुमान : राम भैया !

राम : आओ भैया हनुमान ! कुशल तो है न?

हनुमान : भैया, बड़ी भयानक खबर है। जटायु की हत्या हो गई है।

राम : जटायु की हत्या ! कैसे ? कब ?

सुग्रीव : रेंजर ने हत्या करवाई है। उन्हें बड़ी क्रूरता से मारा गया है।

राम : बड़े दुख की बात है। मेधा बहन कहां हैं ?

सुग्रीव : मेधा बहन को खबर दी गई है। वह आती ही होंगी।

[मेधा का प्रवेश]

राम : मेधा बहन, तुम्हें किन शब्दों में सांत्वना दूं। जटायु हम सभी का भाई था। उसकी मौत से हम सभी का एक हिस्सा मर गया है।

मेधा : राम, उनके लिए सहानुभूति के शब्दों की जरूरत नहीं है। मैं नहीं रोऊंगी। उन्होंने एक संकल्प लिया था। उसे पूरा किया। वे मरे नहीं, अमर हो गये हैं।

राम : बहन, तुम चिन्ता मत करो। हम अपराधियों को दंड दिलायेंगे। ऊंची से ऊंची अदालत में जायेंगे।

मेधा : राम, वहां हमें कभी न्याय नहीं मिलेगा। जिन लोगों पर न्याय का दायित्व है, वही कानून तोड़ रहे हैं। न्याय साग-भाजी की तरह बिक रहा है। न्याय मंदिरों की गरिमा बिलकुल नष्ट हो गई है।

राम : बड़े दुख की बात है।

मेधा : राम, इन अदालतों से ऊपर एक अदालत है। जनता की अदालत। इतिहास की अदालत। हम सभी अपराधियों को इसी अदालत में खड़ा करेंगे।

राम : मेधा बहन, एक पूरी व्यवस्था से लड़ना आसान नहीं है।

मेधा : राम, यह कैसी व्यवस्था है जिसने आदमी को कई कटघरे में बांट दिया है। कानून को कई कटघरों में बांट दिया है। इस व्यवस्था ने हमें सिर्फ शोषण और दुख दिया है।

राम : इस व्यवस्था के लिए हम भी कम जिम्मेवार नहीं हैं। हम सभी ने छोटे से छोटे स्वार्थों के लिए अन्याय से सुलह किया है।

मेधा : राम, आम जनता मजबूर रहती है। सुबह से

शाम तक उसे भूख और अभाव के राक्षसों से लड़ना पड़ता है। वह अकेले कितनी लड़ाइयां लड़ सकता है।

राम : मेधा बहन, तुम ठीक कहती हो। परिस्थितियों ने आम आदमी का मुंह बंद कर दिया है। हाथ-पैर बांध दिये हैं।

मेधा : राम, इतिहास उन्हें कभी माफ नहीं करेगा जो सब कुछ जानते हुए भी चुप है। उठो राम, एक क्रांति तुम्हारे दरवाजे पर दस्तक दे रही है। एक व्यवस्था मर चुकी है। एक नई व्यवस्था जनम लेने वाली है।

राम : ठीक है, मेधा बहन। राम फिर एक बार रावण से युद्ध करने को तैयार है। जटायु ने एक पूरी व्यवस्था को चुनौती दी थी। हम उसी लड़ाई को लड़ेंगे—अंतिम मोर्चे और अंतिम व्यक्ति तक। गांव-गांव में संदेश भेजो। सभी लोगों को इकट्ठा करो।

मेधा : सभी लोगों को सूचना दी जा चुकी है। लोग अनगिनत टोलियों में मार्च कर चुके हैं।

राम : ठीक है, हम घेर लें, पूरे रावण परिवार को ! कोई भागने नहीं पाये। कल हम इन्हें जनता की अदालत में प्रस्तुत करेंगे। जनता ही इन्हें दंडित करेगी।

हनुमान : राम भैया, इसमें एक खतरा है। ये लोग सीता बहन से दुर्व्यवहार कर सकते हैं।

राम : हनुमान, इतिहास का चक्का चल चुका है। सीता की सुरक्षा का सवाल इसमें बाधक नहीं

बन सकता।

हनुमान : क्या हम पहले सीता बहन को बचा नहीं सकते ?

राम : शायद नहीं ! इतना मत सोचो ! इतिहास, राम और सीता—दोनों से बड़ा है।

[धनुष लेकर अनेक आदिवासियों का प्रवेश। राम एक धनुष ले लेते हैं। सब लोग अर्ध-वृत में आगे बढ़ते हैं। मंत्री दल का फ्रीज टूटता है]

मंत्री : कौन हो, तुम लोग ! क्या चाहते हो।

राम : हम देश की जनता हैं। हम तुमसे जवाब मांगने आये हैं।

मंत्री : किस बात का जवाब ?

राम : तुम्हारी अव्यवस्था का, तुम्हारे शोषण का, तम्हारे भ्रष्टाचार का ! हम तुमसे अन्तिम फैसला करने आये हैं।

मंत्री : शट अप ! लाल, पुलिस फोर्स बुलाओ।

राम : कहीं कोई नहीं है। इस जनसमूह को देखकर सब भाग गये हैं।

[बंदूक लेकर रेंजर का प्रवेश]

रजर : खबरदार, कोई आगे बढ़ेगा तो गोलियों से भून दिया जायेगा।

[बंदूक लेकर सीता का प्रवेश]

सीता : मां दुर्गा के आठ हाथ थे। आज क्रांति के भी कई हाथ हैं। तुमसे एक पुराना हिसाब-किताब बाकी था। महिषासुर का वध जरूरी है।

[सीता फायर करती है। रेंजर जमीन पर

गिरकर तड़पने लगता है। मंत्री और दूसरे लोग हाथ उठाकर आत्मसमर्पण कर देते हैं। सब लोग फ्रीज हो जाते हैं]

[सूत्रधार और नटी का प्रवेश]

(गीत)

जब-जब रावण की जुड़ी कतारें,
उतरी काली आंधी,
तब-तब राम ने जनम लिया,
आया एक कर्मठ गांधी।
धरती से उभरी आवाजें—
क्रांति ! मां क्रांति ! जय-जय-जय मां क्रांति !
महिषासुर के सपने टूटे,
सोने की लंका हुई नास,
भले राम ने तजी अयोध्या,
पाया बरसों का बनवास !
सड़कों से रात-रात गीत उठे,
क्रांति, मां क्रांति, जय-जय-जय मां क्रांति !
राह चलेगी, राही होंगे,
व्यास लिखेंगे नव इतिहास,
पुनः जलेगी कौरव नगरी
दुर्योधन का होगा नास !
युग के सन्नाटे तोड़ेंगी—
क्रांति, मां क्रांति, जय-जय-जय मां क्रांति !

पटाक्षेप

कुछ विशिष्ट सम्मतियां

प्रो० श्याम मोहन अस्थाना ने साहित्य-लेखन और रंगमंच के क्षेत्र में सराहनीय कार्य किया है। यह हम सभी के लिए प्रेरणा का विषय है।

(श्रीमती) संतोष साहनी
बलराज साहनी मार्ग,
जुहू, बम्बई

'मेरा नाम मथुरा है' रंगमंच के सिमटते दायरे के बीच एक प्रयोगवादी चिन्तन है। इसमें व्यवस्था की खामियों के बीच प्रेमचंद को एक समीक्षक के रूप में खड़ा किया गया है। 'गोदान' की पात्रा झुनिया बलात्कार झेलकर 'मथुरा' और 'माया त्यागी' बनने का दावा करती है। वह सवाल पूछती है—दादा, जुल्म की रात कब बीतेगी? गरीबों की सुबह कब होगी? यह प्रश्न सिर्फ झुनिया का ही नहीं, आज पूरी शोषित पीढ़ी का प्रश्न है।

सूर्यकान्त द्विवेदी
अमर उजाला, मेरठ

'Mera Nam Mathura Hai' is a great play, written and directed by Prof. S.M. Asthana. It is not just about Mathura, a raped tribal girl of Gujrat; it is a living document of contemporary society. The writer has well used the Premchand legend and given sharp comments on social problems. It is a voice of hope; it speaks of light at the end of the dark turnel.

Sudarshan Gour,
President,
All India Artists Association
Shimla.